Sohila Sahib

अध्यात्म की ओर एक यात्रा

हिंदी अनुवाद

SikhBookClub.com

SGGSONLINE.COM

गुटका - सोहिला साहिब

सोहिला साहिब.....1
प्रार्थना.....9
यात्रा के लिए दर्शन.....15
महिलाओं की भूमिका.....18
पगड़ी की अहमियत.....23
विनम्रता आपकी यात्रा का प्रमुख सार है.....25

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher: SikhBookClub.com

SikhBookClub.com
SGGSONLINE.COM

सोहिला साहिब

ਸੋਹਿਲਾ ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਦੀਪਕੀ ਮਹਲਾ ੧
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
जिस सत्संगति में निरंकार की कीर्ति का गान होता है तथा करतार के गुणों का विचार किया जाता है;

तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥
उसी सत्संगति रूपी घर में जाकर सृष्टि रचयिता के यश का गायन करो और उसी का सिमरन करो॥ १॥

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
हे मानव ! तुम उस भय-रहित मेरे वाहिगुरु की प्रशंसा के गीत गाओ।

हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
साथ में यह कहो कि मैं उस सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ। जिसका सिमरन करने से सदैव सुखों की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
हे मानव जीव ! जो पालनहार ईश्वर नित्य-प्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुम पर भी अपनी कृपा-दृष्टि करेगा।

तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥
उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं।॥ २॥

ਸੰਬਤਿ ਸਾਹਾ ਲਿਖਿਆ ਮਿਲਿ ਕਰਿ ਪਾਵਹੁ ਤੇਲੁ ॥
स्मबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥
इस लोक से जाने के लिए साहे-पत्र रूपी संदेश संवत्-दिन आदि लिख कर नियत किया हुआ है, इसलिए वाहिगुरु से मिलाप के लिए अन्य सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो। अर्थात् - मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ-कर्म कर लो ।

ਦੇਹੁ ਸਜਣ ਅਸੀਸੜੀਆ ਜਿਉ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ॥੩॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥
हे मित्रो ! अब शुभाशीष दो कि सतिगुरु से मिलाप हो जाए॥ ३॥

ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹੋ ਪਾਹੁਚਾ ਸਦੜੇ ਨਿਤ ਪਵੰਨਿ ॥
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
प्रत्येक घर में इस साहे-पत्र को भेजा जा रहा, नित्य यह संदेश किसी न किसी घर पहुँच रहा है। (नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है।

ਸਦਣਹਾਰਾ ਸਿਮਰੀਐ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵੰਨਿ ॥੪॥੧॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥
श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि हे जीव ! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, क्योंकि वह दिन निकट आ रहे हैं ॥ ४ ॥ १ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु आसा महला १ ॥
रागु आसा महला १ ॥

ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥
सृष्टि की रचना में छः शास्त्र हुए, इनके छः ही रचयिता तथा उपदेश भी अपने-अपने तौर पर छः ही हैं।

ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਏਕੋ ਵੇਸ ਅਨੇਕ ॥੧॥
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥
किंतु इनका मूल तत्व एक ही केवल परमात्मा है, जिसके भेष अनन्त हैं।

ਬਾਬਾ ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥
बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥
हे मनुष्य ! जिस शास्त्र रूपी घर में निरंकार की प्रशंसा हो, उसका गुणगान हो,

ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ ਵਡਾਈ ਤੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥
उस शास्त्र को धारण कर, इससे तेरी इहलोक व परलोक दोनों में शोभा होगी॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਿਸੁਏ ਚਸਿਆ ਘੜੀਆ ਪਹਰਾ ਥਿਤੀ ਵਾਰੀ ਮਾਹੁ ਹੋਆ ॥
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥
काष्ठा, चसा, घड़ी, पहर, तिथि व वार मिलकर जैसे एक माह बनता है।

ਸੂਰਜੁ ਏਕੋ ਰੁਤਿ ਅਨੇਕ ॥
सूरजु एको रुति अनेक ॥
इसी तरह ऋतुओं के अनेक होने पर भी सूर्य एक ही है। (यह तो इस सूर्य के अलग-अलग अंश हैं।)

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੇ ਕੇਤੇ ਵੇਸ ॥੨॥੨॥
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥
वैसे ही हे नानक ! कर्ता-पुरुष के उपरोक्त सब स्वरूप ही दिखाई पड़ते हैं ॥ २ ॥ २ ॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु धनासरी महला १ ॥
रागु धनासरी महला १ ॥

ਗਗਨ ਮੈ ਥਾਲੁ ਰਵਿ ਚੰਦੁ ਦੀਪਕ ਬਨੇ ਤਾਰਿਕਾ ਮੰਡਲ ਜਨਕ ਮੋਤੀ ॥
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
सम्पूर्ण गगन रूपी थाल में सूर्य व चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समूह जैसे थाल में मोती जड़े हुए हों।

ਧੂਪੁ ਮਲਆਨਲੋ ਪਵਣੁ ਚਵਰੋ ਕਰੇ ਸਗਲ ਬਨਰਾਇ ਫੂਲੰਤ ਜੋਤੀ ॥੧॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
मलय पर्वत की ओर से आने वाली चंदन की सुगंध धूप के समान है, वायु चंवर कर रही है, समस्त वनस्पति जो फूल आदि खिलते हैं, ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष की आरती के लिए समर्पित हैं।॥ १॥

ਕੈਸੀ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥
कैसी आरती होइ ॥
प्रकृति में तेरी कैसी अलौकिक आरती हो रही है

ਭਵ ਖੰਡਨਾ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ॥
भव खंडना तेरी आरती ॥
सृष्टि के जीवों का जन्म-मरण नाश करने वाले हे प्रभु !

ਅਨਹਤਾ ਸਬਦ ਵਾਜੰਤ ਭੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥
कि जो एक रस वेद ध्वनि हो रही है वह मानों नगारे बज रहे हों। ॥१॥ रहाउ॥

ਸਹਸ ਤਵ ਨੈਨ ਨਨ ਨੈਨ ਹਹਿ ਤੋਹਿ ਕਉ ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਨਨਾ ਏਕ ਤੋਹੀ ॥
सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति ननना एक तोही ॥
हे सर्वव्यापक निराकार ईश्वर ! तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई भी आँख नहीं है, इसी प्रकार हज़ारों तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, परंतु तुम्हारा एक भी रूप नहीं हैं क्योंकि तुम निर्गुण स्वरूप हों,

ਸਹਸ ਪਦ ਬਿਮਲ ਨਨ ਏਕ ਪਦ ਗੰਧ ਬਿਨੁ ਸਹਸ ਤਵ ਗੰਧ ਇਵ ਚਲਤ ਮੋਹੀ ॥੨॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सर्गुण स्वरूप में तुम्हारे हज़ारों निर्मल चरण-कमल हैं किंतु तुम्हारा निर्गुण स्वरूप होने के कारण एक भी चरण नहीं है, तुम धाणेन्द्रिय (नासिका) रहित भी हो और तुम्हारी हजारों ही नासिकाएँ है; तुम्हारा यह आश्चर्यजनक स्वरूप मुझे मोहित कर रहा है॥ २॥

ਸਭ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
सृष्टि के समस्त प्राणियों में उस ज्योति-स्वरूप की ज्योति ही प्रकाशमान है।

ਤਿਸ ਦੈ ਚਾਨਣਿ ਸਭ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
उसी की प्रकाश रूपी कृपा से सभी में जीवन का प्रकाश है।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
किंतु गुरु उपदेश द्वारा ही इस ज्योति का बोध होता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥੩॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
जो उस ईश्वर को भला लगता है वही उसकी आरती होती है॥ ३॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਵਲ ਮਕਰੰਦ ਲੋਭਿਤ ਮਨੋ ਅਨਦਿਨੁ ਮੋਹਿ ਆਹੀ ਪਿਆਸਾ ॥
हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥
हरि के चरण रूपी पुष्पों के रस को मेरा मन लालायित है, नित्य-प्रति मुझे इसी रस की प्यास रहती है।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਲੁ ਦੇਹਿ ਨਾਨਕ ਸਾਰਿੰਗ ਕਉ ਹੋਇ ਜਾ ਤੇ ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਵਾਸਾ ॥੪॥੩॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥
हे निरंकार ! मुझ नानक पपीहे को अपना कृपा-जल दो, जिससे मेरे मन का टिकाव तुम्हारे नाम में हो जाए॥ ४॥ ३॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨਗਰੁ ਬਹੁ ਭਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਖੰਡਲ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥
यह मानव शरीर काम व क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है; लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने काम, क्रोध को क्षीण कर दिया हैं।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਤ ਲਿਖੇ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਮੰਡਲ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੧॥
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥
जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मो के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही ईश्वर में लीन हुआ है॥ १॥

ਕਰਿ ਸਾਧੂ ਅੰਜੁਲੀ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥
करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥
संत-जनों को हाथ जोड़कर वंदना करना बड़ा पुण्य कर्म है।

ਕਰਿ ਡੰਡਉਤ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥
उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कार्य है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਕੰਡਾ ਹੇ ॥
साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥
पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो परमेश्वर से विस्मृत) ने अकाल पुरुष के रस का आनंद नहीं पाया,क्योंकि उनके अंतर में अहंकार रूपी कांटा होता है।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਚਲਹਿ ਚੁਭੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਡੰਡਾ ਹੇ ॥੨॥
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥
जैसे-जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ-चुभ कर कष्ट देता रहता है और अंतिम समय में यमों द्वारा दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं।॥ २ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਦੁਖੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥
इसके अतिरिक्त जो मानव जीव सांसारिक वैभव अथवा भौतिक पदार्थों का त्याग करके परमेश्वर के भक्त बन कर उसके सिमरन में लिवलीन रहते हैं, ये आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दुखों से छूट जाते हैं,

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਪਰਮੇਸਰੁ ਬਹੁ ਸੋਭ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਹੇ ॥੩॥
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥
उन्हें नाश रहित सर्वव्यापक परमात्मा मिल जाता हैं और खण्डों-ब्रह्मण्डों में उनको शोभायमान किया जाता है॥ ३||

ਹਮ ਗਰੀਬ ਮਸਕੀਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਵਡ ਵਡਾ ਹੇ ॥
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ||
हे प्रभु ! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं, तुम सर्वोच्चतम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਟੇਕ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੪॥੪॥
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥
हे नानक ! जीव को तुम्हारे ही नाम का आश्रय है, हरि के नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है॥ ४॥ ४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

ਕਰਉ ਬੇਨੰਤੀ ਸੁਣਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥
करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥
हे सत्संगी मित्रो ! सुनो, मैं तुम्हे प्रार्थना करता हूँ कि यह जो मानव शरीर प्राप्त हुआ हैं, वह संत जनों की सेवा करने का शुभावसर है।

ਈਹਾ ਖਾਟਿ ਚਲਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਆਗੈ ਬਸਨੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥
यदि यह सेवा करोगे तो इस जन्म में प्रभु के नाम-सिमरन का लाभ प्राप्त होगा, जिससे परलोक में वास सरलता से होगा ॥ १॥

ਅਉਧ ਘਟੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਾਰੇ ॥
अउध घटै दिनसु रैणारे ॥
हे मन ! समय व्यतीत होते हुए निशदिन यह उम्र कम हो रही है।

ਮਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए तुम गुरु से मिलकर उनकी शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन के पार हेतु समस्त कार्य पूर्ण कर लो॥ १॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਕਾਰੁ ਸੰਸੇ ਮਹਿ ਤਰਿਓ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥
इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥
इस जगत् में समस्त जीव काम-क्रोधादि विकारों और भ्रमों में लिप्त हैं, यहाँ से कोई तत्वेता यानी ब्रह्म का ज्ञान रखने वाला ही मोक्ष को प्राप्त हुआ है।

ਜਿਸਹਿ ਜਗਾਇ ਪੀਆਵੈ ਇਹੁ ਰਸੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਤਿਨਿ ਜਾਨੀ ॥੨॥
जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥
विकारों में लिप्त जिस मानव को ईश्वर ने स्वयं माया रूपी निद्रा से जगाकर नाम-रस पिला दिया, वही उस अकथनीय प्रभु की अलौकिक कथा को जान सका है॥

ਜਾ ਕਉ ਆਏ ਸੋਈ ਬਿਹਾਝਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਨਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥
जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥
इसलिए हे सत्संगियों ! जिस नाम रूप अमूल्य वस्तु का व्यापार करने आए हो उसे ही खरीदो, इस मन में हरि का वास गुरु द्वारा ही होता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇਗੋ ਫੇਰਾ ॥੩॥
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥
यदि तुम गुरु की शरण लोगे तभी इस हृदय रूपी घर में हरि का स्वरूप बसा सकोगे और आत्मिक सुखों का आनंद प्राप्त करोगे, जिससे फिर इस संसार में आने-जाने का चक्र समाप्त हो जाएगा ॥ ३॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸਰਧਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੇ ॥
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥
हे मेरे अंतर्मन को जानने वाले सर्वव्यापक सृजनहार ! मेरे मन की श्रद्धा को पूर्ण करो।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਇਹੈ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ਮੋ ਕਉ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੪॥੫॥

नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

गुरु साहिब कथन करते हैं कि यह सेवक सिर्फ यही कामना करता है कि मुझे केवल संतों की चरण-धूल बना दो ॥४ ॥ ५॥

प्रार्थना

੧ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥

एक-ओंकार। वाहेगुरु जी की फतेह

ब्रह्म एक है। सारी जीत चमत्कारिक गुरु (भगवान) की है।

ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ।

श्री भगौती जी सहाय

आदरणीय तलवार (दुष्टों के संहारक के रूप में भगवान) हमारी मदद करें!

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦॥

वार श्री भगौती जी की पातशाही दासवी

दसवें गुरु द्वारा सुनाई गई आदरणीय तलवार की स्तुति।

ਪ੍ਰਿਥਮ ਭਗੌਤੀ ਸਿਮਰਿ ਕੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਲਈਂ ਧਿਆਇ॥

प्रीतम भगौती सिमर के, गुरु नानक लयी ध्याय

पहले तलवार को याद करो (बुराइयों के संहारक के रूप में भगवान); फिर नानक को याद करें (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)।

ਫਿਰ ਅੰਗਦ ਗੁਰ ਤੇ ਅਮਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੈ ਹੋਈਂ ਸਹਾਇ॥

फ़िर अंगद गुर ते अमर दास, रामदासाई होए सहाय

फिर गुरु अंगद, गुरु अमर दास और गुरु राम दास को याद करें और उनका ध्यान करें; क्या वे हमारी मदद कर सकते हैं! (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਅਰਜਨ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਨੋ ਸਿਮਰੌ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਰਾਇ॥

अर्जन हरगोबिंद नो सिमरौ श्री हर राय

गुरु अर्जन, गुरु हरगोबिंद और आदरणीय गुरु हर राय को याद करें और उनका ध्यान करें। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਧਿਆਈਐ ਜਿਸ ਡਿਠੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਜਾਇ॥

श्री हरकृष्ण धिया-एई जिस धिथे सब दुख जाय

आदरणीय गुरु हर कृष्ण को याद करें और उनका ध्यान करें, जिनके दर्शन से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਉ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ॥

तेग बहादुर सिमरीई घर न निधि आवाए धाये

गुरु तेग बहादुर को याद करें और फिर आध्यात्मिक धन के नौ स्रोत आपके घर तेजी से आएंगे।

ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥

सब थाई होए सहाय

हाय भगवान्! कृपया हमें रास्ता दिखाकर हर जगह हमारी मदद करें।

ਦਸਵਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀ! ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥

दासा पतसाही दी जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, दे पाठ दीदार दा ध्यान धार के बोलो जी वाहेगुरु

आदरणीय दसवें गुरु गोबिंद सिंह (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें) को याद करें।

ਦਸਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਠ ਦੀਦਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

दासा पतसाही दी जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, दे पाठ दीदार दा ध्यान धार के बोलो जी वाहेगुरु

आदरणीय गुरु ग्रंथ साहिब में निहित दस राजाओं के दिव्य प्रकाश पर विचार और ध्यान करें और अपने विचारों को दिव्य शिक्षाओं की ओर मोड़ें और गुरु ग्रंथ साहिब की दृष्टि से आनंद प्राप्त करें; बिल्कुल वही गुरु (अद्भुत भगवान)!

ਪੰਜਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਚੌਹਾਂ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ, ਚਾਲ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕਤਿਆਂ, ਹਠੀਆਂ ਜਪੀਆਂ, ਤਪੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾ ਨਾਮ ਜਪਿਆ, ਵੰਡ ਛਕਿਆ, ਦੇਗ ਚਲਾਈ, ਤੇਗ ਵਾਹੀ, ਦੇਖ ਕੇ ਅਣਡਿੱਠ ਕੀਤਾ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਸਚਿਆਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ, ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

पंजा पियारिया, चौहा साहिबजादिया, चालिया मुख्तिया, हथिया, जपिया, तपिया, जीना नाम जपिया, वड़ शाकिया, देग चलाई, तेग वही, देख के अन्धेठ कीता, तिन्हा पिरिया, सचियारिया दी कमाई, दा ध्यान धार बोलोजी वाहेगुरु

(गुरु गोबिंद सिंह के) चार पुत्रों के पांच प्रियजनों के कर्मों के बारे में सोचो; चालीस शहीदों की; अदम्य दृढ़ संकल्प के बहादुर सिखों की; नाम के रंग में डूबे भक्तों की; उन लोगों में से जो नाम में लीन थे; उन लोगों में से जिन्होंने नाम का स्मरण किया और साहचर्य में अपना भोजन साझा किया; मुफ्त रसोई शुरू करने वालों में से; (सत्य की रक्षा के लिए) तलवार चलाने वालों में से; दूसरों की कमियों की अनदेखी करने वालों में से; उपरोक्त सभी शुद्ध और सच्चे समर्पित थे; बिल्कुल वही गुरु (अद्भुत भगवान)!

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਹੇਤ ਸੀਸ ਦਿੱਤੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਟਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਲੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖੜੀਆਂ ਤੇ ਚੜੇ, ਆਰਿਆਂ ਨਾਲ ਚਿਰਾਏ ਗਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹਾਰਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਕੇਸਾਂ ਸੁਆਸਾਂ ਨਾਲ ਨਿਬਾਹੀ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

जीना सिंघा सिंघनेया ने धरम हेट सीस दिट्टे, बुंद बुंद कुट्टई, खोप्रिया लुहैया, चारुक्रिया ते चढे, आरिया नाल चिराए गे, गुरुद्वाराया दी सेवा लई कुर्बानिया कीतिया, धरम नहीं हारिया, सिखी केसा सुवासा नाल निबाही, तिना दे कामयी दा ध्यान धार के बोलो जी वाहिगुरू

उन बहादुर सिख पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं द्वारा की गई अनूठी सेवा के बारे में सोचें और याद करें, जिन्होंने अपने सिर का बलिदान किया लेकिन अपने सिख धर्म को आत्मसमर्पण नहीं किया; जिसने शरीर के हर जोड़ के टुकड़े-टुकड़े कर लिए; जिनकी खोपड़ी निकाल दी; जिन्हें पहियों पर बांधकर घुमाया जाता था और टुकड़ों में तोड़ दिया जाता था; जिन्हें आरी से काटा गया था; जो जिंदा भाग गए थे; जिन्होंने गुरुद्वारों की गरिमा बनाए रखने के लिए अपना बलिदान दिया; जिन्होंने अपने सिख धर्म को नहीं छोड़ा; जिन्होंने अपने सिख धर्म को कायम रखा और अंतिम सांस तक अपने लंबे बालों को बचाया; बिल्कुल वही गुरु (अद्भुत भगवान)!

ਪੰਜਾਂ ਤਖਤਾਂ, ਸਰਬੱਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

सारे तख्त सरबत गुरुद्वारा दा ध्यान धर के बोलो जी वाहेगुरु

अपने विचारों को सिख धर्म के सभी आसनों और सभी गुरुद्वारों की ओर मोड़ें; बिल्कुल वही गुरु (अद्भुत भगवान)!

ਪ੍ਰਿਥਮੇ ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਆਵੇ, ਚਿੱਤ ਆਵਨ ਕਾ ਸਦਕਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।

पृथ्वमैं सरबत खालसा जी की अरदास है जी, सरबत खालसा जी को वाहेगुरु वाहेगुरु वाहेगुरु चित आवई चित आवन का सदका सुरब सुख होवे

सबसे पहले सभी आदरणीय खालसा यह प्रार्थना करें कि वे आपके नाम का ध्यान करें; और इस तरह के ध्यान के माध्यम से सभी सुख और सुख प्राप्त हो सकते हैं

ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਤਹਾਂ ਤਹਾਂ ਰਛਿਆ ਰਿਆਇਤ, ਦੇਗ ਤੇਗ ਫ਼ਤਹਿ, ਬਿਰਦ ਕੀ ਪੈਜ, ਪੰਥ ਕੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਕੇ ਬੋਲ ਬਾਲੇ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

जहां जहां खालसा जी साहब, तहा तहा रछेया रेयायत, देग तेग फतेह, बिरध की पैज, पंथ की जीत, श्री साहिब जी सहाय खालसे जी को बोल बाले, बोलो जी वहीगुरु

आदरणीय खालसा जहाँ भी मौजूद हों, अपनी सुरक्षा और कृपा प्रदान करें; मुफ्त रसोई और तलवार कभी असफल न हो; अपने भक्तों का सम्मान बनाए रखें; सिख लोगों पर जीत प्रदान करें; आदरणीय तलवार हमेशा हमारी मदद के लिए आए; खालसा को हमेशा सम्मान मिले; बिल्कुल वही गुरु (अद्भुत भगवान)!

ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਦਾਨ, ਕੇਸ ਦਾਨ, ਰਹਿਤ ਦਾਨ, ਬਿਬੇਕ ਦਾਨ, ਵਿਸਾਹ ਦਾਨ, ਭਰੋਸਾ ਦਾਨ, ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ, ਨਾਮ ਦਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਚੌਂਕੀਆਂ, ਝੰਡੇ, ਬੁੰਗੇ, ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਅਟੱਲ, ਧਰਮ ਕਾ ਜੈਕਾਰ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!!!

सिखा नू सिखी दान, केश दान, रहत दान, विवेक दान, भरोसा दान, दाना सिर दान नाम दान, चौंकिया झंडे बूगे जुगो जुग्ग अटल, धर्म का जाय कार बोलो जी वाहेगुरु

कृपया सिखों को सिख धर्म का उपहार, लंबे बालों का उपहार, सिख कानूनों का पालन करने का उपहार, दिव्य ज्ञान का उपहार, दृढ़ विश्वास का उपहार, विश्वास का उपहार और नाम का सबसे बड़ा उपहार प्रदान करें। रब्बा बे! गाना बजानेवालों, हवेली और बैनर हमेशा के लिए मौजूद रहें; सत्य की कभी विजय हो; बिल्कुल वही गुरु (अद्भुत भगवान)!

ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਵਾਂ, ਮਤ ਉੱਚੀ ਮਤ ਦਾ ਰਾਖਾ ਆਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ।

सिखा दा मन नीवा, मत ऊंची, मत पत दा राखा आप वहीगुरु

सभी सिखों के मन विनम्र रहें और उनका ज्ञान ऊंचा हो; रब्बा बे! आप ज्ञान के रक्षक हैं।

ਹੇ ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਦੇ ਤਾਣ, ਨਿਓਟਿਆਂ ਦੀ ਓਟ, ਸੱਚੇ ਪਿਤਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ! ਆਪ ਦੇ ਹਜ਼ੂਰ.....ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ।

हे निमनिया दे मान, नितानिया दे तान, निओतिया दी ओट, सच्चे पिता वहीगुरु (आप दी हजूर... दी अरदास है जी)

हे सच्चे पिता, वाहे गुरु! आप दीन की शान हैं, असहायों की शक्ति, आश्रयहीनों का आश्रय, हम नम्रता से आपकी उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं.....(यहां किए गए अवसर या प्रार्थना को प्रतिस्थापित करें)।

ਅੱਖਰ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕ ਮਾਫ ਕਰਨੀ। ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸ ਕਰਨੇ।

अखर वादा घटा भूल चुक माफ़ करनी, सरबत दे कारज रास करने.

कृपया उपरोक्त प्रार्थना को पढ़ने में हमारी त्रुटियों और कमियों को माफ़ करें। कृपा करके सभी के उद्देश्यों की पूर्ति करें।

ਸੇਈ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਿਆਂ ਤੇਰਾ ਨ ਚਿੱਤਆਵੇ। ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ।

सई प्यारे मेल, जीना मिलिया तेरा नाम चित आवई, नानक नाम चरदी कला, तेरे भाने सरबत दा भला

कृपया हमें उन सच्चे भक्तों से मिलवाएं, जिनसे मिल कर, हम आपके नाम का स्मरण और ध्यान कर सकें। रब्बा बे! सच्चे गुरु नानक के माध्यम से, आपका नाम ऊंचा हो सकता है, और आपकी इच्छा के अनुसार सभी समृद्ध हो सकते हैं

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ

वाहेगुरु जी का खालसा वाहेगुरुजी की फतेह

खालसा भगवान का है; सारी जीत भगवान की जीत है।

यात्रा के लिए दर्शन

सिख धर्म की धारणा को लॉजिक, व्यापकता और आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के लिए "बिना तामझाम के" नजरिये की खासियत है। इसका धर्मशास्त्र सादगी से चिह्नित है। सिख नैतिकता में आदमी के खुद के लिए कर्तव्य और समाज के प्रति (संगत) के बीच कोई टकराव नहीं है।

सिख धर्म लगभग 500 साल पहले गुरु नानक द्वारा स्थापित सबसे युवा विश्व धर्म है। यह एक सर्वोच्च व्यक्ति और ब्रह्मांड को बनाने वाले (वाहेगुरु) में भरोसे पर जोर देता है। यह लगातार आनंद के लिए एक आसान सीधा रास्ता देता है और प्यार और सांसारिक भाईचारे का संदेश फैलाता है। सिख धर्म सख्ती से एक एकेश्वरवादी विश्वास है और ईश्वर को एकमात्र ऐसे व्यक्ति के रूप में मान्यता देता है जो समय या स्थान की सीमा के अधीन नहीं है।

सिख धर्म का मानना है कि केवल एक ही ईश्वर है, जो निर्माता, पालनकर्ता, संहारक है और मानव रूप नहीं लेता है। अवतार के सिद्धांत का सिख धर्म में कोई स्थान नहीं है। यह देवी-देवताओं और अन्य देवताओं को कोई मूल्य नहीं देता है।

सिख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते हैं। आध्यात्मिक विकास की ओर कदम बढ़ाने के लिए व्यक्ति को दैनिक जीवन में नैतिक गुणों को विकसित करना चाहिए और सद्गुणों का अभ्यास करना चाहिए। ईमानदारी, करुणा, उदारता, धैर्य और नम्रता जैसे गुणों का निर्माण प्रयासों और दृढ़ता से ही किया जा सकता है। हमारे महान गुरुओं का जीवन इस दिशा में प्रेरणा का स्रोत है।

सिख धर्म सिखाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ना और ईश्वर में विलीन होना है। यह गुरु की शिक्षाओं का पालन करके, पवित्र नाम (नाम) पर ध्यान और सेवा और दान के कृत्यों के प्रदर्शन से पूरा किया जा सकता है।

नाम मार्ग भगवान के स्मरण के लिए दैनिक भक्ति पर जोर देता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को पांच भावनाओं, काम (इच्छा), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (सांसारिक लगाव) और अहंकार (अभिमान) को नियंत्रित करना होगा। संघ सिख धर्म में उपवास और तीर्थयात्रा, शगुन और तपस्या जैसे अनुष्ठानों और नियमित प्रथाओं को अस्वीकार कर दिया गया है। मानव जीवन का लक्ष्य भगवान के साथ विलय करना है और यह गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का पालन करके पूरा किया जाता है। सिख धर्म भगती मार्ग या भक्ति मार्ग पर जोर देता है। हालाँकि, यह ज्ञान मार्ग (ज्ञान का मार्ग) और करम मार्ग (कार्रवाई का मार्ग) के महत्व को पहचानता है। यह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर की कृपा अर्जित करने की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल देता है।

सिख धर्म एक आधुनिक, तार्किक और व्यावहारिक धर्म है। यह मानता है कि सामान्य पारिवारिक जीवन (ग्राहस्त) मोक्ष के लिए कोई बाधा नहीं है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य या संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। सांसारिक बीमारियों और प्रलोभनों के बीच अलग रहना संभव है। एक भक्त को संसार में रहना चाहिए और फिर भी अपने सिर को सामान्य तनाव और उथल-पुथल से ऊपर रखना चाहिए। वह एक विद्वान सैनिक होना चाहिए, और भगवान के लिए संत होना चाहिए।

सिख धर्म एक सर्वदेशीय और "धर्मनिरपेक्ष धर्म" है और इस प्रकार जाति, पंथ, नस्ल या लिंग के आधार पर सभी भेदों को खारिज करता है। यह मानता है कि भगवान की नजर में सभी इंसान समान हैं। गुरुओं ने महिलाओं की समानता पर जोर दिया और कन्या भ्रूण हत्या और सती (विधवा जलाने) प्रथा को खारिज कर दिया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का भी सक्रिय रूप से प्रचार किया और पर्दा प्रथा को खारिज कर दिया। मन को उस पर केंद्रित रखने के लिए पवित्र नाम (नाम) का ध्यान करना चाहिए और सेवा और दान के कार्य करना चाहिए। ईमानदारी से काम (किरत कर्ण) के माध्यम से अपनी आजीविका अर्जित करना सम्मानजनक माना जाता है, न कि भीख या बेईमानी से। दूसरों के साथ बांटना वंद छकना भी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह दसवंध (उसकी कमाई का 10%) के माध्यम से जरूरतमंदों की मदद करेगा। सेवा, सामुदायिक सेवा भी सिख धर्म का एक अभिन्न अंग है। हर गुरुद्वारे में मुफ्त सामुदायिक रसोई (लंगर) और सभी धर्मों के लोगों के लिए खुला इस सामुदायिक सेवा की एक अभिव्यक्ति है। सिख धर्म आशावाद और आशा की वकालत करता है। यह निराशावाद की विचारधारा को स्वीकार नहीं करता है।

गुरुओं का मानना था कि इस जीवन का एक उद्देश्य और एक लक्ष्य है। यह आत्म और ईश्वर प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा मनुष्य अपने कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार है। वह अपने कार्यों के परिणामों से प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। इसलिए उसे अपने कार्यों में बहुत सतर्क रहना चाहिए।

सिख धर्मग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, शाश्वत गुरु हैं। यही एकमात्र धर्म है जिसने पवित्र ग्रंथ को धर्मगुरु का दर्जा दिया है। सिख धर्म में एक जीवित मानव गुरु (देहधारी) के लिए कोई जगह नहीं है।

महिलाओं की भूमिका

सिख धर्म के सिद्धांत बताते हैं कि महिलाओं में पुरुषों के बराबर आत्माएं होती हैं और उन्हें अपनी आध्यात्मिकता बनाने का समान हक़ होता है। वे धार्मिक सभाओं में लोगो को रास्ता दिखा सकते हैं, अखंड रास्ता (पवित्र शास्त्रों का लगातार पाठ) में हिस्सा ले सकते हैं, कीर्तन (भजनों को समूह में बोलना) कर सकते हैं, ग्रंथी (पुजारी) के रूप में काम कर सकते हैं। वे सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष कामो में हिस्सा ले सकते हैं। सिख धर्म पुरुषों और महिलाओं को बराबरी देने वाला पहला प्रमुख सांसारिक धर्म था। गुरु नानक ने जेंडर पर आधारित बराबरी का उपदेश दिया, और उनके उत्तराधिकारी गुरुओं ने महिलाओं को सिख पूजा और अभ्यास की सभी गतिविधियों में पूरा हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया।

गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"औरत और आदमी, सभी भगवन ने बनाए हैं। यह सब भगवान का खेल है। नानक कहते हैं, आपका सारा संसार अच्छा और पवित्र है" -एसजीजीएस पृष्ठ 304

सिख इतिहास ने पुरुषों की सेवा, भक्ति, बलिदान और बहादुरी में महिलाओं को बराबर रूप से दिखने की भूमिका दर्ज की है। महिलाओं की नैतिक गरिमा, सेवा और आत्म-बलिदान के कई उदाहरण सिख परंपरा में लिखे गए हैं। सिख धर्म के अनुसार औरत और आदमी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आपसी रिश्ते और एक दूसरे पर निर्भरता की व्यवस्था में जहां पुरुष स्त्री से जन्म लेता है, और स्त्री पुरुष के बीज से पैदा होती है।

सिख धर्म के अनुसार एक पुरुष अपने जीवन में एक महिला के बिना सुरक्षित और पूर्ण महसूस नहीं कर सकता है, और एक पुरुष की सफलता उस महिला के प्यार और त्याग से जुडी है जो उसके साथ अपना जीवन बांटती है, और इसके उलट। **गुरु नानक ने कहा:**

" यह एक महिला है जो दौड़ को जारी रखती है" और हमें "स्त्री को फालतू और दोषी नहीं समझना चाहिए, [जब] महिला से नेता और राजा पैदा होते हैं।" एसजीजीएस पृष्ठ 473।

मोक्ष: उठाने का एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि क्या कोई धर्म महिलाओं को मुक्ति प्राप्त करने के काबिल मानता है, यहां भगवान की प्राप्ति या सबसे ऊँचे आध्यात्मिक जगह, गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी प्राणियों में भगवान बस्ता है, भगवान सभी रूपों में स्त्री और पुरुष व्याप्त हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 605)।

गुरु ग्रंथ साहिब के ऊपर लिखी बात से, भगवन की रौशनी दोनों लिंगों के साथ समान रूप से रहती है। इसलिए पुरुष और महिला दोनों ही गुरु की शिक्षाओं का पालन करके समान रूप से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों में, एक महिला को पुरुष की आध्यात्मिकता में रूकावट माना जाता है, लेकिन सिख धर्म में नहीं। गुरु ने इसे अस्वीकार कर दिया। 'सिख धर्म पर वर्तमान विचार' में, एलिस बसर्के कहती हैं,

"पहले गुरु ने महिला को पुरुष के बराबर रखा ... महिला पुरुष के लिए रूकावट नहीं थी, बल्कि भगवान की सेवा करने और मुक्ति की खोज में एक हिस्सेदार थी"।

विवाह

गुरु नानक ने गृहस्थ की सिफारिश की - एक गृहस्थ का जीवन, ब्रह्मचर्य और त्याग के बजाय, पति और पत्नी समान भागीदार थे और दोनों पर निष्ठा का विधान था। पवित्र छंदों में, घरेलू सुख को एक पोषित आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और विवाह भगवन के लिए प्यार की अभिव्यक्ति के लिए एक चल रहे रूपक प्रदान करता है। प्रारंभिक सिख धर्म के कवि और सिख सिद्धांत के एक आधिकारिक व्याख्याकार भाई गुरदास महिलाओं को उच्च श्रद्धांजलि देते हैं। वह कहता है:

"एक महिला, अपने माता-पिता के घर में पसंदीदा है, अपने पिता और मां से बहुत प्यार करती है। अपने ससुराल में, वह परिवार का आधार है, इसके अच्छे भाग्य की गारंटी है ... आध्यात्मिक ज्ञान में साझा करना और ज्ञान और महान गुणों से संपन्न, एक महिला, पुरुष का दूसरा आधा, उसे मुक्ति के दरवाजे तक ले जाता है।" (वरन, वी.16)

बराबरी का दर्जा

पुरुषों और महिलाओं के बीच समान जगह सुनिश्चित करने के लिए, गुरुओं ने दीक्षा, निर्देश या संगत (पवित्र संगति) और पंगत (एक साथ भोजन) कामो में भाग लेने के मामलों में लिंगों के बीच कोई भेद नहीं किया। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश के अनुसार, गुरु अमर दास ने महिलाओं द्वारा घूंघट के इस्तेमाल का विरोध किया। उन्होंने महिलाओं को शिष्यों में कुछ समुदायों की निगरानी करने के लिए चुना और सती प्रथा के खिलाफ प्रचार किया। सिख इतिहास में कई महिलाओं के नाम दर्ज हैं, जैसे माता गुजरी, माई भागो, माता सुंदरी, रानी साहिब कौर, रानी सदा कौर और महारानी जींद कौर, जिन्होंने अपने समय की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा

सिख धर्म में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह किसी की भी सफलता की चाबी है। यह व्यक्तिगत विकास की एक प्रक्रिया है और यही कारण है कि तीसरे गुरु ने कई स्कूलों की स्थापना की। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी दिव्य ज्ञान और चिंतन गुरु के माध्यम से प्राप्त होते हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 831)।सभी के लिए शिक्षा जरूरी है और सभी को सबसे अच्छा बनने के लिए काम करना चाहिए। तीसरे गुरु द्वारा भेजे गए सिख मिशनरियों में बावन महिलाएं थीं। 'सिख महिलाओं की भूमिका और स्थिति' में, डॉ मोहिंदर कौर गिल लिखती हैं,

"गुरु अमर दास को भरोसा था कि कोई भी शिक्षा तब तक जड़ नहीं पकड़ सकती जब तक कि उन्हें महिला लोक स्वीकार नहीं करती"।

कपड़ों पर रोक

महिलाओं को घूंघट नहीं पहनने की जरूरत के अलावा, सिख धर्म ड्रेस कोड के बारे में एक आम लेकिन बहुत महत्वपूर्ण बयान देता है। यह लिंग की परवाह किए बिना सभी सिखों पर लागू होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"ऐसे कपड़े पहनने से बचें जिनमें शरीर आराम ना महसूस करे और मन बुरे विचारों से भरा हो।" एसजीजीएस, पेज 16

इस प्रकार, सिखों को एहसास होगा कि किस तरह के कपड़े मन को बुरे विचारों से भर देते हैं और उनसे बचना चाहिए। सिख महिलाओं से कृपाण (तलवार) और बाकी के साथ अपनी रक्षा करने की उम्मीद की जाती है, यह महिलाओं के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह इतिहास में पहली बार है जब महिलाओं से अपनी रक्षा करने की उम्मीद की गई थी और उनसे शारीरिक सुरक्षा के लिए पुरुषों पर निर्भर होने की उम्मीद नहीं की गई थी।

एसजीजीएस उद्धरण:

"जमीन और आकाश में, मुझे कोई दूसरा नहीं दिखाई देता। सभी महिलाओं और पुरुषों में, उसकी रौशनी चमक रही है।" Sggs पृष्ठ 223।

स्त्री से पुरुष का जन्म होता है; स्त्री के भीतर, पुरुष की कल्पना की जाती है; महिला से वह जुड़ा हुआ है और विवाहित है। औरत उसकी दोस्त बन जाती है; नारी के माध्यम से आने वाली पीढ़ियां आती हैं। जब उसकी स्त्री मर जाती है, तो वह दूसरी स्त्री को ढूंढ़ता है; स्त्री के लिए वह बाध्य है। तो उसे बुरा क्यों कहते हो? उन्हीं से राजा पैदा होते हैं। स्त्री से स्त्री का जन्म होता है; औरत के बिना, कोई भी नहीं होगा। गुरु नानक, एसजीजीएस पृष्ठ 473

दहेज के संबंध में: "हे मेरे भगवान, मुझे अपना नाम मेरी शादी के उपहार और दहेज के रूप में दे दो।" श्री गुरु राम दास जी, पृष्ठ 78, पंक्ति 18 एसजीजीएस

परदा की प्रथा के बारे में: "रुको, रुको, बहू - अपने चेहरे को घूंघट से मत ढको। आखिर में, इससे तुम्हें आधा ढांचा भी नहीं मिलेगा। जो तुम उससे पहले उसका चेहरा ढका करते थे उसके कदमों पर मत चलो। अपने चेहरे को ढकने का एकमात्र गुण यह है कि कुछ दिनों के लिए लोग कहेंगे, "कितनी अच्छी दुल्हन आई है। आपका घूंघट तभी सच होगा जब आप स्किप, डांस और ग्लोरियस गाएंगे। भगवान की स्तुति। -पी। 484, एसजीजीएस

महिलाओं और वास्तव में सभी आत्माओं को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया गया था: "आओ, मेरी प्यारी बहनों और आध्यात्मिक साथियों, मुझे अपने आलिंगन में गले लगाओ। चलो एक साथ जुड़ते हैं, और हमारे सर्वशक्तिमान पति भगवान की कहानियां सुनाते हैं।" - गुरु नानक , पीजी 17, एसजीजीएस।

"मित्र, अन्य सभी कपडे सुख को ख़तम कर देते हैं, अंगों को पहनने से पीड़ा होती है, और मन को गलत सोच से भर देता है" -एसजीजीएस पृष्ठ 16

पगड़ी की अहमियत

पगड़ी हमेशा से एक सिख का कभी अलग ना होने वाला अंग रही है। लगभग 1500 A.D और सिख धर्म के संस्थापक या जनम देने वाले गुरु नानक के समय से, सिख पगड़ी पहने हुए हैं।

पगड़ी या "पगड़ी" को अक्सर "पग" या "दस्तार" के रूप में छोटा किया जाता है, एक ही लेख के लिए अलग अलग बोलियों में अलग-अलग शब्द हैं। ये सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपने सिर को ढकने के लिए पहने जाने वाले कपड़ो की और इशारा करते हैं। यह एक हेडड्रेस है जिसमें सिर के चारों ओर एक लंबे दुपट्टे की तरह कपड़े को लपेटा जाता है या कभी-कभी एक अंदरूनी "टोपी" या पटका होता है। परंपरागत रूप से भारत में, पगड़ी केवल समाज में ऊंची स्तर के पुरुषों द्वारा पहनी जाती थी; नीची जगह या नीची जाति के पुरुषों को पगड़ी पहनने की इजाजत नहीं थी।

हालाँकि, बिना कटे बालों को रखने के लिए गुरु गोबिंद सिंह ने पाँच के या भरोसे के पाँच लेखों में से एक के रूप में जरूरी किया था, यह लंबे समय से 1469 में सिख की शुरुआत से ही सिख धर्म से जुड़ा हुआ है। सिख धर्म दुनिया का एकमात्र धर्म है, जो सभी बालिग पुरुषों के लिए पगड़ी पहनना जरूरी है। पश्चिमी देशों में पगड़ी पहनने वाले ज्यादातर लोग सिख हैं। सिख पगड़ी को दस्तार भी कहा जाता है। 'दस्तार ' एक फारसी शब्द है। इसका मतलब है 'भगवान का हाथ' जिसका मतलब है उनका आशीर्वाद।

सिख अपनी कई और खास पगड़ियों के लिए मशहूर हैं। परंपरागत रूप से, पगड़ी सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है, और लंबे समय से केवल बड़प्पन के लिए राखी गयी एक वस्तु रही है। भारत के मुगल शासन के दौरान, केवल मुसलमानों को पगड़ी पहनने की इजाजत थी। सभी गैर-मुस्लिमों को यह पहनने से सख्ती से रोक दिया गया था।

गुरु गोबिंद सिंह ने मुगलों द्वारा इस रोक का विरोध करते हुए अपने सभी सिखों को पगड़ी पहनने के लिए कहा। यह उच्च नैतिक मानकों की मान्यता में पहना जाना था जिसे उन्होंने अपने खालसा अनुयायियों के लिए तैयार किया था। वह चाहते थे कि उनका खालसा अलग हो और "बाकी दुनिया से अलग दिखने के लिए" दृढ़ संकल्पित हो। वह चाहते थे कि वे सिख गुरुओं द्वारा निर्धारित अद्वितीय रस्ते का पालन करें। इस तरह, एक पगड़ीधारी सिख हमेशा भीड़ से अलग रहा है, जैसा कि गुरु का इरादा था; क्योंकि वह चाहता था कि उसके 'संत-सैनिक' न केवल आसानी से पहचाने जाये, बल्कि आसानी से मिल भी जाएँ।

जब कोई सिख पुरुष या महिला पगड़ी पहनता है, तो पगड़ी सिर्फ कपड़े का एक बैंड नहीं रह जाती है; क्योंकि यह सिख के सिर के साथ एक ही हो जाता है। पगड़ी, साथ ही सिखों द्वारा पहनी जाने वाली आस्था के चार अन्य लेखों का और आध्यात्मिक और लौकिक महत्व है। जबकि पगड़ी पहनने से जुड़े संकेत कई हैं - संप्रभुता, त्याग, आत्म-सम्मान, बहादुरी और धर्मपरायणता, लेकिन सिखों द्वारा पगड़ी पहनने का मुख्य कारण यह दिखाना है - उनके जनम दाता खालसा गुरु गोबिंद सिंह के लिए उनका प्यार, आज्ञाकारिता और सम्मान।

ऊपर दिए हुए रौशनी वाले शब्दों को किसी और चीज़ से प्रतिस्थापित करने की जरूरत है। 'कारण' हो सकते हैं

"पगड़ी हमारे लिए हमारे गुरु का उपहार है। इस तरह हम खुद को सिंह और कौर के रूप में ताज पहनाते हैं जो हमारी अपनी ऊँची चेतना के प्रति जिम्मेदारी के सिंहासन पर बैठते हैं। पुरुषों और महिलाओं के लिए समान रूप से, यह प्रोजेक्टिव पहचान रॉयल्टी, अनुग्रह और विशिष्टता को व्यक्त करती है। यह दूसरों के लिए एक इशारा है कि हम कभी ना ख़तम होने वाले की छवि में रहते हैं और सभी की सेवा के लिए खड़े हैं। पगड़ी पूरी जिम्मेदारी के अलावा किसी भी चीज़ का इशारा नहीं करती है। जब आप अपनी पगड़ी बांधकर बाहर खड़े होना चुनते हैं, तो आप बिना किसी डर के एक एकल के रूप में खड़े होते हैं, छह अरब लोगों से बाहर खड़ा व्यक्ति। यह सबसे असाधारण काम है।" (सिखनेट से उद्धृत)

विनम्रता आपकी यात्रा का प्रमुख सार है

विनम्रता सिख धर्म का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके अनुसार सिखों को भगवान के सामने विनम्रता से झुकना चाहिए। विनम्रता या निम्रता, पंजाबी में पास से जुड़ा शब्द हैं। निम्रता एक गुण है जिसे गुरबानी में जोर-शोर से प्रचारित किया जाता है। इस पंजाबी शब्द का अनुवाद "विनम्रता", "परोपकार" या "विनम्रता" है। कोई जिसका मन इस विचार से विचलित न हो कि वह किसी से बेहतर या ज्यादा महत्वपूर्ण है।

समस्या क्षेत्र - ऊपर सही वाक्य नहीं है

यह सभी मनुष्यों के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और एक सिख के दिमाग का एक जरूरी हिस्सा है और यह गुण हर समय सिख के साथ होना चाहिए। सिख शस्त्रागार में अन्य चार गुण हैं:
सत्य (शनि), संतोष (संतोख), करुणा (दया) और प्रेम (प्यार)।

ये पांच गुण एक सिख के लिए आवश्यक हैं और इन गुणों को विकसित करने और उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के लिए गुरबानी का ध्यान और पाठ करना उनका कर्तव्य है।

गुरबानी हमें क्या बताती है:
"विनम्रता का फल सहज शांति और आनंद है। विनम्रता के साथ वे ईश्वर, उत्कृष्टता के खजाने का ध्यान करना जारी रखते हैं। ईश्वर-चेतन व्यक्ति विनम्रता में डूबा हुआ है। जिसका हृदय दयापूर्वक नम्रता से भरा हुआ है। सिख धर्म विनम्रता को भीख माँगता है। भगवान के सामने कटोरा, "

गुरु नानक, सिख धर्म के पहले गुरु:
"अपने मन में प्रेम और नम्रता के साथ सुनना और विश्वास करना, अपने आप को नाम के साथ पवित्र मंदिर में शुद्ध करें।" - एसजीजीएस पृष्ठ 4।

"संतोष को अपने कान की बाली, नम्रता को अपना भिक्षापात्र, और ध्यान को उस राख को बना लें जो आप अपने शरीर पर लगाते हैं।" -एसजीजीएस पेज 6।

"विनम्रता के क्षेत्र में, शब्द सौंदर्य है। वहां अतुलनीय सुंदरता के रूप हैं।" एसजीजीएस पेज 8.

"विनम्रता, नम्रता और सहज समझ मेरी सास और ससुर हैं" -एसजीजीएस पेज 152।

अध्यात्म की ओर सफर

गुरु ग्रंथ साहिब एक अविनाशी जिन्दा गुरु, सिख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक कविता के रूप में लेख है। लेखन उनके जरिये से सभी मनुष्य जाति के लिए भगवान की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब में नजर किसी भी तरह के दुःख के बिना भगवन के न्याय पर आधारित समाज की है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को मानता है और उनकी इज्जत करता है, यह इन धर्मों में से किसी एक के साथ सदाचार मेल-मिलाप नहीं दिखाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर ही इज्जत दी जाती है। महिलाओं में पुरुषों की तरह आत्माएं होती हैं और इस तरह उन्हें मुक्ति लेने के समान मौके के साथ अपनी आध्यात्मिकता को बनाने में बराबर हक़ होता है। महिलाएं प्रथम धार्मिक मंडलियों के साथ साथ सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्म निरपेक्ष कामो में हिस्सा ले सकती हैं।

सिख धर्म बराबरी, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और बाकी धर्मों के लिए सहनशक्ति की वकालत करता है। रोज की ज़िन्दगी में दया, ईमानदारी, नम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए सिख धर्म का जरूरी संदेश हर समय भगवन की आध्यात्मिक भक्ति और श्रद्धा है। सिख धर्म के तीन मुख्य सिद्धांत हैं: ध्यान करना और भगवान को याद करना, ईमानदार जीवन के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक सफर पर जाने की कोशिश करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी असली के करीब नहीं हो सकता है, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में है और रूपकों का इस्तेमाल काम को बहुत मुश्किल बना देता है। ईश्वरीय संदेश में, हिंदू और मुस्लिम पौराणिक कहानियो का अक्सर प्रहलाद, हरनाकश, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि का इस्तेमाल किया जाता है। कृपया उन्हें शाब्दिक रूप से न पढ़ें बल्कि उनके पीछे की बात या सन्देश को समझें। ध्यान इस बात पर है कि भगवन एक है और उसके साथ एक होना मानव जीवन का काम है।

आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश आप तक पहुँचाने के लिए यह काम कई स्वयंसेवकों द्वारा सालो से किया जा रहा है। यदि आपके कोई सवाल हैं, तो कृपया Walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हम इस सफर में आपके साथ जुड़ना पसंद करेंगे।

SikhBookClub.com
SGGSonline.com